समग्र शिक्षा अभियान

कक्षा-7

अमृता

द्वितीयो भागः

बिहार शैक्षणिक गुणवत्ता अभियान

(बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्)

द्वारा

संचालित "समझें-सीखें", गुणवत्ता शिक्षा कार्यक्रम के बीस सूचक-

1. विद्यालय का समय से खुलना एवं बन्द होना ।
2. समय से चेतना सत्र का आयोजन ।
3. हर एक बच्चा एवं शिक्षक विद्यालय के समय विद्यालय में उपस्थित ।
4. हर एक बच्चा एवं हर एक शिक्षक सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में तल्लीन।
5. शिक्षकों को बच्चे के शैक्षिक स्तर की जानकारी एवं उसका संधारन ।
6. सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन ।
7. कक्षा एक के लिए विशिष्ट रूप से निर्धारित पूर्णकालिक शिक्षक ।
8. विद्यालय के सभी कक्षाओं में श्यामपट्ट का पूर्ण उपयोग ।
9. सभी कक्षाओं में दैनिक शिक्षण तालिका की उपलब्धता तथा उपयोग ।
10. अंतिम घंटी में खेलकूद, कला तथा सांस्कृतिक गतिविधियां ।
11. विद्यालयों में उपलब्ध कराए गए कहानी की किताबें, खेल-सामग्री आदि का उपयोग ।
12. मेनू के अनुसार मध्याह्न भोजन का दैनिक वितरण ।
13. सक्रिय बाल-संसद तथा मीना मंच ।
14. साफ सुथरे बच्चे तथा साफ सुथरा विद्यालय ।
15. उपलब्ध पेयजल व्यवस्था एवं शौचालयों का उपयोग ।
16. विद्यालय परिसर में बागवानी ।
17. विद्यालयों में उपलब्ध कराए गए अनुदानों का उपयोग ।
18. सभी बच्चों के पास अपनी कक्षा की पाठ्य पुस्तकें उपलब्ध ।
19. विद्यालय प्रबंध समिति की नियमित बैठक में शिक्षा की गुणवत्ता पर चर्चा ।
20. विद्यालय में साप्ताहिक कक्षावार शिक्षक अभिभावक की नियमित बैठक ।

अमृता

द्वितीयो भागः

सप्तम-वर्गस्य कृते

(राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार द्वारा विकसित)

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना

निदेशक (प्राथमिक शिक्षा), शिक्षा विभाग, बिहार सरकार द्वारा स्वीकृत।

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार, पटना
के सौजन्य से सम्पूर्ण बिहार राज्य के निमित्त।

© बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना

समग्र शिक्षा अभियान : 2019 - 20 – 6,14,321 प्रतियाँ

मूल्य– ₹ 45.00 (पैंतालीस रुपये)

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पाठ्य-पुस्तक भवन, बुद्ध मार्ग, पटना-800 001 द्वारा प्रकाशित तथा पटना ऑफसेट प्रेस, घरहरा कोठी, नया टोला, पटना- 800 004 द्वारा 70 जी०एस०एम० रिसाइकिल टेक्स्ट पेपर (वाटर मार्क) ए ग्रेड मिल एवं 175 जी०एस०एम० आर्ट बोर्ड (वर्जिन पल्प) आवरण पेपर पर कुल 1,00,000 प्रतियाँ 24 × 18 से.मी. साइज में मुद्रित।

प्राक्कथन

शिक्षा विभाग, बिहार सरकार के निर्णयानुसार अप्रैल, 2009 से प्रथम चरण में राज्य के IX हेतु नए पाठ्यक्रम को लागू किया गया। इस क्रम में शैक्षिक सत्र 2010-11 के लिए वर्ग I, VI एवं X की सभी भाषायी एवं गैर भाषायी पाठ्य-पुस्तकें नए पाठ्यक्रम के अनुरूप लागू की इस नए पाठ्यक्रम के आलोक में एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा विकसित वर्ग X की त एवं विज्ञान तथा एस.सी.ई.आर.टी., बिहार, पटना द्वारा विकसित वर्ग I, III, VI एवं X की अन्य भाषायी एवं गैर भाषायी पुस्तकें बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक निगम द्वारा आवरण चित्रण मुद्रित की गयीं। इस सिलसिले की कड़ी को आगे बढ़ाते हुए शैक्षिक सत्र 2011-12 के लिए I, IV एवं VII तथा शैक्षिक सत्र 2012-13 के लिए वर्ग V एवं VIII की नई पाठ्य-पुस्तकें राज्य के छात्र / छात्राओं के लिए उपलब्ध करायी गयीं। साथ-ही-साथ वर्ग I से VIII तक की कों का नया परिमार्जित रूप शैक्षिक सत्र 2013-14 से एस.सी.ई.आर.टी., बिहार, पटना के न्य से प्रस्तुत किया गया

बिहार राज्य में विद्यालयीय शिक्षा के गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए माननीय मुख्यमंत्री, र, श्री नीतीश कुमार, शिक्षा मंत्री, श्री कृष्ण नन्दन प्रसाद वर्मा एवं शिक्षा विभाग के न सचिव, श्री आर. के. महाजन के मार्ग दर्शन के प्रति हम हृदय से कृतज्ञ हैं।

एस.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली तथा एस.सी.ई.आर.टी., बिहार, पटना के निदेशक के भी आभारी हैं, जिन्होंने अपना सहयोग प्रदान किया।

बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम छात्रों, अभिभावकों, शिक्षकों, शिक्षाविदों की णियों एवं सुझावों का सदैव स्वागत करेगा, जिससे बिहार राज्य को देश के शिक्षा जगत में तम स्थान दिलाने में हमारा प्रयास सहायक सिद्ध हो सके।

विनोद कुमार सिंह, भा०प्र०से०

प्रबंध निदेशक

बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम लि०

पटना।

मिशन मानव विकास

शिक्षा का उद्देश्य किताबी शैक्षिक ज्ञान के साथ बच्चे/छात्र-छात्राओं का सर्वांगीण विकास करना है। इसके साथ-साथ स्वास्थ्य, पोषण, स्वच्छता, शुद्ध पेयजल, सामाजिक न्याय, महिला, सशक्तिकरण, महादलित-अतिपिछड़ा-अल्पसंख्यक वर्ग के लिए विशेष पहल से ही हमारे समाज के परिपेक्ष्य में पूर्ण मानव विकास सम्भव है। हमारे विद्यालय इस सामाजिक परिवर्तन प्रयास का केन्द्र बनेंगे तथा बच्चे परिवर्तन के सिपाही। वस्तुतः विद्यालय को ज्ञान,कौशल और जीवन की शिक्षा के साथ-साथ सामाजिक परिवर्तन का केन्द्र बनाकर **'मिशन मानव विकास'** सफल होगा।

अतः **मिशन मानव विकास** में निम्नलिखित संवाद घर-घर जन-जन तक पहुँचाना आवश्यक है–

1. बच्चे नियमित रूप से विद्यालय में जीवन की शिक्षा हासिल करें।
2. लड़कियों की शादी 18 वर्ष से कम उम्र में नहीं की जाए। किशोरी बालिकाओं में विशेष रूप से खून की कमी दूर की जाए।
3. नई पीढ़ी स्वास्थ्य गारण्टी कार्यक्रम के अधीन 0–14 वर्ष के सभी बालक तथा 0–18 वर्ष की सभी बालिकाओं का नियमित वार्षिक स्वास्थ्य परीक्षण एवं उपचार सुनिश्चित की जाए।
4. हर गाँव/टोला मुहल्ला बस्ती में स्वच्छता अभियान चलायी जाए। कूड़ा और गन्दगी दूर भगाया जाए। खुले में शौच की जगह घर-घर उपयोगी शौचालय निर्माण हो।
5. स्वच्छ पेयजल और स्वच्छता से ही बीमारियों पर काबू पाया जा सकता है।
6. सभी नवजात शिशु के जन्म लेते माँ का दूध दिया जाए तथा छः महीने तक केवल माँ का दूध ही दिया जाए। इससे कुपोषण में कमी आयेगी।
7. बच्चों की बीमारियों का उपचार सरलता से और ससमय उपलब्ध हो।
8. आँगनवाड़ी केन्द्रों के माध्यम से विशेष रूप से 0–3 वर्ष के बच्चों का नियमित वजन, ऊँचाई इत्यादि लेने की व्यवस्था हो।
9. महादलित, अल्पसंख्यक तथा अतिपिछड़ा वर्ग की महिलाओं के लिए साक्षरता कार्यक्रम विद्यालय परिसर में संचालित हो।
10. बच्चों द्वारा घर-घर सर्वेक्षण करा कर तम्बाकू सेवन और मदिरापान में कमी लायी जाए।
11. पौधा लगाने तथा पर्यावरण संतुलन बनाये रखने के लिए बच्चों के माध्यम से सामाजिक संवाद घर-घर तक पहुँचायें।
12. बच्चों के नियमित खेल-कूद, योग, ध्यान जैसे क्रियाओं को प्रोत्साहित किया जाए।
13. बालिकाओं को उच्च माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया जाए तथा हर ग्राम पंचायत में ऐसे शिक्षण की व्यवस्था हो।
14. हुनर और कौशल विकास के साथ-साथ महिला बचत समूहों के माध्यम से विकास हो।

विद्यालय को **मिशन मानव विकास** का केन्द्र बिन्दु बनाने हेतु विद्यालय में **मिशन मानव विकास कॉर्नर** स्थापित किया जाए। इसमें बच्चों द्वारा मानव विकास की प्राथमिकताओं को दर्शाने हेतु विभिन्न माध्यमों, यथा पोस्टर, चित्र, मॉडल निर्माण आदि का उपयोग हो। अन्तर विद्यालय प्रतियोगिता कर श्रेष्ठ मिशन मानव विकास कॉर्नर को पुरस्कृत करने की व्यवस्था भी की जाए।

दिशा बोध सह पाठ्य-पुस्तक विकास समन्वय समिति

श्री राहुल सिंह, राज्य परियोजना निदेशक
बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना

श्री रामशरणागत सिंह, संयुक्त निदेशक
शिक्षा विभाग, बिहार सरकार

श्री अमित कुमार, सहायक निदेशक
प्राथमिक शिक्षा निदेशालय, बिहार सरकार

डॉ० श्वेता सांडिल्य
शिक्षा विशेषज्ञ, यूनिसेफ, पटना

- **श्री हसन वारिस,** निदेशक
  एस.सी.ई.आर.टी., पटना
- **श्री मधुसूदन पासवान,** कार्यक्रम पदाधिकारी
  बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना
- **डॉ० एस. ए. मुईन,** विभागाध्यक्ष
  एस.सी.ई.आर.टी., पटना
- **डॉ० ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी,** प्राचार्य
  मैत्रेय कॉलेज ऑफ एजुकेशन एण्ड मैनेजमेंट, हाजीपुर

षय विशेषज्ञ - **प्रो० उमाशंकर शर्मा 'ऋषि'**, पूर्व आचार्य तथा अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना

मन्वयक - **डॉ० सुरेन्द्र कुमार**, व्याख्याता, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार, पटना

खक सदस्य

1. **डॉ० मधु बाला सिन्हा**, व्याख्याता, धर्मसमाज संस्कृत महाविद्यालय, मुजफ्फरपुर
2. **डॉ० सीताराम झा**, सहायक शिक्षक, मध्य विद्यालय, हाबीभौआर, बेनीपुर, दरभंगा
3. **शहिद आलम**, सहायक शिक्षक, उच्च माध्यमिक विद्यालय, हड़सर धनौती, सिवान
4. **(श्री) शंभू राय**, सहायक शिक्षक, राजकीय कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय, गुलजारबाग, पटना सिटी; पटना
5. **(श्रीमती) प्रियंका**, सहायक शिक्षिका, अनुग्रह नारायण सर्वोदय उच्च विद्यालय, उसफा, पटना

स्कृत पाठ्य-पुस्तक समीक्षा संगोष्ठी के सदस्य

प्रो० ब्रह्मचारी सुरेन्द्र कुमार, पूर्व कुलपति, कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा।

डॉ० मिथिलेश कुमारी मिश्र, अनुसंधान पदाधिकारी, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना।

ाभार : यूनिसेफ, बिहार

पुरोवाक्

संस्कृतं भारतवर्षस्य अतीव महत्त्वपूर्णा प्राचीना च भाषा वर्तते । अस्या अध्ययनं विद्यालयेषु वि विषयैः सह परम्परया क्रियते । छात्राणां सामञ्जस्यं संस्कृतादिभिः विषयैः सह विद्यालय-शिक्षाकाले संस्था जायते । क्रमेण 2005 तमे ईस्वीवर्षे राष्ट्रियपाठ्यचर्यायाः रूपरेखा प्रकाशिताऽभूत् यत्र छात्राणां विद्यालयजीव संयोजनं विद्यालयेतरजीवनेन भवेदित्यनुशंसितम् । ततः पूर्वं शिक्षाव्यवस्थायां पुस्तकीयं ज्ञानमेव मुख्यमा यत्र विद्यालयस्य परिवारस्य समाजस्य च मध्येऽन्तरालं पोषितम् । राष्ट्रियपाठ्यचर्यावलम्बितानि पाठ्यपुस्त सम्प्रति मूलभावस्य व्यवहारदिशायां प्रयत्नरूपाणि वर्तन्ते । संस्कृतविषयस्य अनुशीलने बिहारराज्येऽपि तथाभू पाठ्यपुस्तकानि भवेयुः इत्यस्माकं संकल्पः । अस्माकमयमभिनवः प्रयासः 1986 ईस्वीयायां राष्ट्रियशिक्षा अनुशंसितायाः बालकेन्द्रितायाः शिक्षाव्यवस्थाया विकासाय कल्पिष्यते इति वयमाशास्महे ।

एतादृशस्य नूतनस्य प्रयासस्य सफलता तु विद्यालयानां प्राचार्याणां शिक्षकाणां च तथाभूतान् प्रयासानेवाल यत्र ते सर्वानपि छात्रान् स्वानुभवेन ज्ञानार्जनाय, कल्पनाशीलताया विकासाय, प्रश्नांश्च प्रष्टुं प्रोत्साहयन्ति इदमत्र स्वीकरणीयं यद् रुचिपूर्णा पाठसामग्री, तदनुशीलनाय स्वतन्त्रता च यदि छात्रेभ्यो दीयते तदा ते वय प्रदत्तेन ज्ञानेन संयुज्य स्वयमपि नूतनं ज्ञानं सृजन्ति । परीक्षायाः कार्यक्रमोऽपि व्यापको भवेत्, न पाठ्यपुस्तकाश्रितं ज्ञानमात्रम् । बालकेषु सर्जनशक्तेः कार्यारम्भप्रवृत्तेश्च उपक्रमः तदैव सम्भवेत् यदा वयं सर्वानपि शिक्षणप्रक्रियायाः प्रतिभागित्वेन स्वीकुर्याम, न तु निर्धारितज्ञानस्य केवलस्य ग्राहकरूपेण ।

उपर्युक्तानि लक्ष्याणि विद्यालयस्य दैनिककार्यक्रमे कार्यपद्धतौ च परिवर्तनमपेक्षन्ते । दैनिकसमयसा परिवर्तनशीलता यथा अपेक्षिता, तथैव वार्षिक-कार्यक्रमाणां निर्वहणे तत्परतापि अनिवार्या वर्तते । शिक्षा नियते काले तदैव वास्तविकं शिक्षणं सम्भवति । नूनं राष्ट्रियशिक्षानीतेः बिहारराज्यस्य स्थितिविशेषस्य दृष्ट्या प्रस्तुतं पाठ्यपुस्तकं छात्राणां विद्यालयीयजीवने आनन्दानुभूतये प्रभावकं भविष्यति, न तु नीरसत साधनम् । पाठ्यचर्याभारस्य निदानाय पाठ्यक्रमनिर्मातृभिः बालमनोविज्ञानदृष्ट्या अध्यापनाय उपलब्धकालदृ च विविधस्तरेषु विषयज्ञानस्य पुनर्निर्धारणेन प्रयत्नो विहितः । पुस्तकमिदं छात्राणां कृते चिन्तनस्य, उत्सुकताया लघुसमूहेषु वार्तायाः, कार्यानुभवादि-गतिविधीनां च प्रभूतमवसरं प्रदास्यति ।

बिहार राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् एतस्य निर्माणकार्ये संस्कृत-पाठ्यपुस्तक-विकास-सं अध्यक्षाय विश्रुतयशसे डॉ. उमाशंकरशर्मणे तत्सहायकेभ्यः प्रतिभागिभ्यश्च भूयोभूयः साधुवादं वित स्वकृतज्ञतां च ज्ञापयति । तद्वत् पाठ्य-पुस्तक-निर्माणक्रमे संयोजककर्मणि दत्तचित्ताय डॉ० सुरेन्द्र कुमार-पाला महान्तमाभारं प्रकाशयति ।

निदेशकः
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परि
बिहार

भूमिका

संसार में अनेक भाषाएँ बोली और लिखी जाती हैं। कुछ भाषाएँ केवल इतिहास में सुरक्षित हैं। उन्हें औपचारिक दृष्टि से मृतभाषा कहते हैं । सौभाग्यवश संस्कृत भाषा संसार की उपलब्ध तथा जीवित भाषाओं में इतिहास की दृष्टि से प्राचीनतम है । इसका साहित्य न्यूनतम चार हजार वर्षों से अनवरत चल रहा है, यद्यपि इसे इस कालावधि में अपनी रक्षा के लिए पर्याप्त संघर्ष करना पड़ा है । संस्कृत ने अपने साहित्य के अन्तर्गत अनेक अन्य भाषाओं और संस्कृतियों को आत्मसात् करके सर्वांगपूर्ण भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधित्व किया है । इसीलिए इसके विषय में एक प्रशस्ति चल पड़ी है - **संस्कृतिः संस्कृताश्रिता** । अर्थात् भारतीय संस्कृति प्रत्यक्षतः या परोक्षतः संस्कृत भाषा पर आश्रित है, इसमें समाविष्ट है । भारत की अधिसंख्य भाषाएँ (जैसे- हिन्दी, बंगला, मराठी, गुजराती, उड़िया, असमिया, मैथिली आदि) इसी से निकली हैं। दक्षिण भारत की चारों प्रमुख भाषाओं (तमिल, तेलुगु, कन्नड़ तथा मलयालम) ने भी संस्कृत की शब्द-सम्पदा को व्यापक रूप से स्वीकार किया है । इस प्रकार बहुत प्राचीनकाल से भारतीय स्तर पर संस्कृत लोकप्रिय तथा श्रद्धास्पद रही है । भारतवर्ष के प्रत्येक क्षेत्र में संस्कृत के विद्वान् कवि तथा लेखक हुए हैं और आज भी अपनी संस्कृत रचनाओं से इस भाषा और साहित्य को सम्पन्न कर रहे हैं । भारतवर्ष की वर्तमान बहुभाषिकता का सर्वोत्तम सेतु संस्कृत भाषा ही है । इस दृष्टि से इस चिर प्राचीन और चिर नवीन भाषा का अध्ययन आवश्यक है ।

भारतीय संस्कृति की उत्तरोत्तर अभिवृद्धि और प्रसार में संस्कृत भाषा का ज्ञान और अध्ययन वर्तमान शिक्षापद्धति में भी सभी ने स्वीकार किया है । विद्यालय-स्तर पर संस्कृत शिक्षण के रुचिकर रूप पर बल देते हुए, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005 ई.) के आलोक में स्वीकृत पाठ्यक्रम के अनुसार तथा बिहार राज्य की विशिष्ट शैक्षिक आवश्यकता के अनुसार राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् (S.C.E.R.T.), बिहार द्वारा संस्कृत की पाठ्य-पुस्तकों के विकास का कार्यक्रम बनाया गया है । इसी कार्यक्रम के अन्तर्गत भाषा-शिक्षा-विभाग द्वारा उच्च प्राथमिक स्तर

पर तीन भागों में विकसित होने वाली नवीन पुस्तक–शृंखला **अमृता** का विकास किया गया है । इन भागों में नैतिक एवं शिक्षाप्रद मूल्यों से परिपूर्ण गद्य–पद्य पाठों का समावेश किया गया है ।

संस्कृत के प्रारंभिक छात्रों के स्वस्थ भाषिक मनोरंजन के लिए इनमें रुचिवर्धक, ज्ञानवर्धक तथा आकर्षक सामग्री का समावेश किया गया है । इस पुस्तक–शृंखला के सभी भाग विद्यालय स्तर के छात्र–छात्राओं में भारतीय संस्कृति की अमर स्रोतस्विनी संस्कृतभाषा के प्रति रुचि तो उत्पन्न करेंगे ही, साथ ही इस भाषा का स्वयं प्रयोग करने की क्षमता भी दे सकेंगे । छात्र क्रमशः संस्कृत भाषा और साहित्य के प्रति अपेक्षित कुशलता पा सकेंगे, ऐसा विश्वास है ।

इस शृंखला का यह द्वितीय पुष्प **अमृता द्वितीयो भागः** छात्रों के लिए प्रस्तुत है । इसका प्रथम भाग इसके पूर्व ही प्रकाशित हो चुका है । इस द्वितीय भाग के निर्माण में भी इस तथ्य पर विशेष ध्यान रखा गया है कि कक्षा में शिक्षक तथा छात्र–छात्राओं के बीच अन्तःक्रिया प्रश्नोत्तर के माध्यम से हो । यह संस्कृत भाषा में हो तो अधिक अच्छा है क्योंकि छात्रों में संस्कृत के सरल वाक्यों को समझने, बोलने, पढ़ने और लिखने की प्रवृत्ति और कुशलता अधिकाधिक होती जायेगी । यह उनके भावी जीवन के लिए भी उपयोगी होगी ।

विद्यालय स्तर पर यह संस्कृत की द्वितीय पाठ्यपुस्तक है । अतः इसमें भी यथासाध्य चित्रों के आधार पर संस्कृत के सम्बद्ध पाठों को प्रस्तुत करने का प्रयास रहा है । पाठ सरल किन्तु स्तरीय हैं । कई पाठों में दैनिक उपयोग के विषयों का समावेश किया गया है । पाठों के निर्माण में नवीन शिक्षाशास्त्रियों के परामर्शानुसार निम्नलिखित विषयों की सामग्री का यथासाध्य समावेश किया गया है – मनोरंजन (जैसे–परिहास–कथा में), खेल (जैसे–प्रहेलिकाः में), विज्ञान (दिनचर्या में) सामाजिक विज्ञान (जैसे–दीपोत्सवः में), गणित (जैसे–संख्याज्ञानम् में), लिङ्ग–समानता (जैसे–स्वतन्त्रता–दिवसः में), पर्व–त्योहार (जैसे–दीपोत्सवः में), विशिष्ट बच्चे (जैसे–डॉ॰ अम्बेदकरः में), पर्यावरण (जैसे–अरण्यम् में), सिनेमा (जैसे–स्वतन्त्रता दिवसः पाठ में

योग्यता-विस्तार के अन्तर्गत), देशभक्ति (जैसे-स्वतन्त्रता दिवस: में), सामाजिक समरसता (जैसे-वसुधैव कुटुम्बकम् में), स्थानीय परिवेश (जैसे-बोधगया में), पशु-पक्षी जाति (जैसे-कूर्मशशक कथा और अरण्यम् पाठों में), स्वास्थ्य (जैसे-दिनचर्या में) तथा ऋतु (जैसे-ऋतुपरिचय: में)। इस प्रकार पाठों का परिवेश व्यापक है तथा सामाजिक मनोविज्ञान को दृष्टि में रखकर निर्मित किया गया है।

छात्रों की रुचि समस्त परिवेश को आत्मसात् कर सकेगी, ऐसा हमारा विश्वास है। उनका बौद्धिक विकास हो, मनोरञ्जन हो, स्वतन्त्र चिंतन की प्रवृत्ति हो तथा सर्जनात्मक क्षमता का भी विकास हो, इसी दृष्टि से पाठों की विषय-वस्तु तथा भाषा-शैली रखी गयी है। प्राय: सभी पाठों का नव विकास किया गया है। केवल 'सुभाषितानि' तथा 'वन्दना' प्राचीन ग्रन्थों से संकलित हैं। सभी पाठों में छात्रों के आस-पास के परिवेश की ही प्रस्तुति है जिससे कोई भी अंश उद्वेजक (ऊबाऊ) न लगे। कुल मिलाकर इसके चौदह पाठ चौदह रत्नों के समान हैं जो उपयोगी तथा बहुमूल्य भी हैं। इनसे संस्कृत के छात्रों और अध्यापकों को वास्तविक आनन्द की प्राप्ति होगी ऐसा विश्वास है।

पाठों का परिचय :

यद्यपि प्रत्येक पाठ के आरम्भ में तथा योग्यता-विस्तार के क्रम में पाठों का महत्त्व तथा सामान्य परिचय दिया गया है फिर भी यहाँ उनके विषय में कुछ निवेदन करना प्रासंगिक है।

1. वन्दना :- मंगलाचरण के रूप में यह पाठ चार पौराणिक श्लोकों का संकलन है जिसमें सर्वधर्म-समभाव की दृष्टि से परमेश्वर की प्रार्थना है। वह सृष्टि, पालन और संहार का नियामक है।

2. कूर्मशशककथा :- यह पञ्चतन्त्र नामक कथाग्रन्थ की एक कथा का सरलीकृत नवीन रूप है जिसमें नियमित परिश्रम की शिक्षा दी गयी है। कूर्म सदा चलते हुए दौड़ की प्रतिस्पर्धा में विजयी होता है जबकि शशक (खरहा) तेज चलने पर भी आलसी और अहंकारी है जिसे पराजय का मुँह देखना पड़ता है।

3. ऋतुपरिचय :- यह भारतवर्ष की छह ऋतुओं का परिचय देने वाला लघुकाय निबंध है। इस
समय-परिवर्तन का ज्ञान होता है। समय सदा एक समान नहीं रहता। परिवेश का परिवर्तन ऋतु क
सूचक है।

4. स्वतन्त्रतादिवस :- यह पाठ वार्त्तालाप के रूप में है जिसमें कक्षा के विभिन्न धर्मानुयायी छा
और छात्राएँ बातचीत करती हैं। भारतीय स्वतन्त्रता पर अतिथि मन्त्री का भाषण भी होता है। इस
देशभक्ति तथा लिङ्ग-समानता का संदेश मिलता है।

5. प्रहेलिका: :- इस पाठ में संस्कृत की पाँच पहेलियाँ पद्य में दी गई हैं जिनका समाधान करने
बौद्धिक व्यायाम होता है। छात्र-छात्राओं की बुद्धि के विकास तथा रुचिवर्धन के लिए पहेलियों क
महत्त्व होता है। इनसे समाज के कलात्मक विनोद का भी परिचय मिलता है।

6. संख्याज्ञानम् :- इस पाठ में 21 से 50 तक की संस्कृत संख्याओं का परिचय दिया गया है। य
परिचय प्रयोगमूलक है। भारतीय भाषाओं में संख्याओं का विकास भी संस्कृत संख्याओं से ही हुअ
है। यह दृष्टि इस पाठ के अनुशीलन से प्राप्त होती है।

7. दीपोत्सव: :- पर्यावरण, सामाजिक विज्ञान तथा समारोह को एक साथ समाविष्ट करने वाल
यह पाठ निबन्धात्मक है। वर्षा की समाप्ति और शीत ऋतु के आगमन के अवसर पर यह प
(दीवाली) अपने आस-पास अनेक त्योहारों को समन्वित करता है। दीपों की ज्वाला में अनपेक्षि
कीट-पतंगों का विनाश होता है तथा मानव मन में उत्साह की भावना भरती है। यह इस पर्व क
महत्त्व है, जिसे इस पाठ में अंकित किया गया है।

8. वसुधैव कुटुम्बकम् :- यह पाठ सामाजिक समरसता तथा वैश्वीकरण पर बल देता है
संस्कृत के प्राचीन विद्वानों ने अपनी उदार दृष्टि से तेरा-मेरा के भाव की घोर निन्दा की थी। संपू
समाज को समान समझकर पूरे जगत् में एकत्व की भावना उन्होंने दी थी। इस पाठ में इसक
निरूपण है।

9. सुभाषितानि :- इस पाठ में संस्कृत कथाग्रन्थ में यत्र-तत्र आए हुए आठ सुभाषित पद्यों का संकलन है। ये पद नीति, दैनिक व्यवहार, सदाचरण इत्यादि की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं। सुंदर उक्तियों का प्रयोग अनेक संस्कृत ग्रन्थों में मिलता है। इनका उपयोग सामान्य वार्तालाप, भाषण, निबंध लेखन इत्यादि में किया जा सकता है।

10. दिनचर्या :- इस पाठ में स्वस्थ जीवन के लिए कुछ व्यावहारिक नियम बताये गए हैं। अपने दैनिक कार्यक्रम को कैसे योजनाबद्ध किया जाये इसका संक्षिप्त निरूपण इसमें हुआ है।

11. डॉ० अम्बेदकर :- आधुनिक युग में सामाजिक क्रान्ति तथा दलित चेतना के अग्रदूत एवं प्रख्यात विधि-विशेषज्ञ डॉ० बाबा साहब भीमराव अम्बेदकर का संक्षिप्त जीवन परिचय दिया गया है। उनकी शैक्षणिक उपलब्धियों तथा कृतियों का भी इसमें निरूपण है।

12. अरण्यम् :- वनों का भारतीय जीवन में बहुत अधिक महत्त्व माना गया था। यहाँ की प्राचीन संस्कृति अरण्यमूलक थी। वनों में ऋषिगण तपस्या करके अमूल्य बौद्धिक अनुसंधान करते थे। आज पर्यावरण की सुरक्षा के लिए उनका महत्त्व है। वनों की रक्षा मानवता की रक्षा के लिए आवश्यक है। इस पाठ में इन विषयों पर संक्षिप्त प्रकाश डाला गया है।

13. परिहास-कथा :- इस पाठ में लोकजीवन से सम्बद्ध, जन-सामान्य में प्रचलित, मिथिला के प्रसिद्ध हास्यकार गोनू झा की एक कथा दी गयी है। गोनू झा से संबद्ध कहानियाँ मिथिला क्षेत्र में बहुत प्रचलित हैं। उन्हीं में से एक का संस्कृत संस्करण बनाया गया है। इस कथा से मनोरंजन के साथ बुद्धि के उपयोग का उपदेश मिलता है।

14. बोधगया :- बिहार के गया के दक्षिण निरंजना नदी के तट पर अवस्थित बोधगया भगवान् बुद्ध की ज्ञान-स्थली के रूप में प्रसिद्ध है। यहाँ एक प्राचीन मन्दिर है जिसमें बुद्ध की प्रतिमा है। मंदिर के पीछे पीपल का वृक्ष है जिसके नीचे बुद्ध को ज्ञानप्राप्ति हुई थी। इस बौद्ध तीर्थस्थल की महत्ता के कारण दक्षिण पूर्व एशिया के कई देशों ने अपने-अपने भव्य बुद्ध मंदिर यहाँ निर्मित किए हैं। इस पाठ में बोधगया का बिहार के पवित्र नगर के रूप में निरूपण है।

इन पाठों में प्रत्येक के अन्त में शब्दार्थ, अनुप्रयुक्त व्याकरण, मौखिक और लिखित अभ्यास के प्रश्न तथा आवश्यक योग्यता-विस्तार की सामग्री दी गई है । इनसे छात्रों की कक्षा में सक्रियता तथा जागरूकता की अभिवृद्धि होगी । यह इन पाठों की प्रस्तुति का उद्देश्य है । आशा है शिक्षक महोदय पाठ के अंत में आई हुई सामग्री का उपयोग कक्षा में सम्यक् रूप से कराएँगे।

इस पुस्तक-शृंखला के इस द्वितीय भाग में भी निम्नांकित बिन्दुओं पर विशेष ध्यान दिया गया है –

- संस्कृत शब्दों और वाक्यों का शुद्ध उच्चारण
- प्रश्नोत्तर के माध्यम से शिक्षक-छात्र की अन्तःक्रिया
- भाषिक तत्त्वों (सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना) के प्रयोग की क्षमता
- नैतिक मूल्यों से युक्त संस्कृत पद्यों का परिचय
- संस्कृत की वर्तनी को शुद्ध रूप में जानने और लिखने की क्षमता
- प्रत्येक पाठ में शब्दार्थ का परिचय
- प्रत्येक पाठ में अपने आस-पास के परिवेश का परिचय
- पर्यावरण के प्रति जागरूकता
- सामाजिक समरसता
- पाठों के अनुरूप चित्रों का संयोजन
- पुस्तक के परिशिष्ट में व्याकरण की आवश्यक सामग्री ।

शिक्षक की भूमिका

किसी पाठ्यक्रम तथा पुस्तक को कितना भी वैज्ञानिक और रोचक बनाया जाए उसकी महत्ता और उपयोगिता का वास्तविक अंकन शिक्षक ही कर सकते हैं। इसलिए अध्यापन-कार्य में लगे हुए शिक्षक की भूमिका बहुत प्रभावी होती है । एक ओर अध्यापन-कार्य में तकनीकी शैली से

युक्त पाठ्यपुस्तकों की अपेक्षा होती है, तो दूसरी ओर पाठ्यपुस्तकों में निहित भाषिक तत्त्वों तथा विषयगत बिन्दुओं के सम्प्रेषण तथा अधिगम में कुशल अध्यापन-शैली भी आवश्यक है । पाठ्यपुस्तक के निर्माण का लक्ष्य तभी पूरा हो सकेगा जब शिक्षकगण अपनी रोचक अध्यापन-शैली से इस पुस्तक की बातों को सम्बद्ध छात्र-छात्राओं तक पहुँचाने में अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करेंगे।

बिहार के बहुभाषिक परिवेश में शिक्षक संस्कृत के अतिरिक्त क्षेत्रीय भाषाओं को भी यथासंभव माध्यम बनाते हुए छात्रों में संस्कृत भाषा में दक्षता प्राप्ति के हेतु बनें तथा इस भाषा की ओर छात्रों को क्रमश: अधिक-से-अधिक उन्मुख करें । उनसे अपेक्षा है कि वे छात्रों के मन में यह बात बैठाएँ कि संस्कृत कोई विचित्र और कठिन भाषा नहीं अपितु हमारी भाषाओं की जननी है। इसी के शब्दों को हम परिवर्तित करके बोलते हैं ।

संस्कृत व्याकरण का अध्यापन पाठों के अन्त में आए हुए अभ्यासों तथा उन पाठों के वाक्यों को आधार बनाकर अनुप्रयुक्त (Applied) रूप से करें। इससे व्याकरण भाररूप नहीं लगेगा। वह भाषा की अभिव्यक्ति में सहायक विषय का काम करेगा । कण्ठस्थीकरण की प्रवृत्ति की अपेक्षा सर्जनात्मक क्षमता का विकास छात्रों में किया जाए । अध्यापक भी नये अभ्यासों की सर्जना करें जिससे छात्रों की अपनी सर्जनाशक्ति का विकास हो तथा उनकी अन्त:वृत्ति संस्कृतमय हो । इससे छात्र अपने परिवेश की अभिव्यक्ति भी संस्कृत में कर सकेंगे ।

संस्कृत भाषा की यह विशिष्टता है कि इसमें प्रयुक्त पद व्याकरण के नियमों से परिपुष्ट होता है, प्रत्येक पद की व्युत्पत्ति होती है, एक-एक पद नए-नए पदों को जन्म देता है जिससे आरंभिक छात्र भी सैकड़ों संस्कृत शब्दों से परिचित हो जाते हैं । शिक्षक यदि चाहें तो शब्दों के पर्याय शब्द, विलोम शब्द तथा उनके प्रयोग भी कक्षा में सिखाएँ। सन्धि के कठिन नियम, समास की जटिलता तथा विभक्तियों के प्रयोग के कठिन नियमों में आरंभिक कक्षा में न जाएँ। तभी संस्कृत भाषा का अध्ययन छात्रोपयोगी तथा आकर्षक होगा, शिक्षक की लोकप्रियता बढ़ेगी ।

आशानुरूप पूर्व के संस्करण पर विभिन्न स्रोतों से सारगर्भित सुझाव प्राप्त हुए। उन सुझावों के आधार पर इस नये संस्करण को संशोधित एवं परिमार्जित कर लिया गया है। हम सुझाव देनेवालों के प्रति आभारी हैं। अब आशा है कि उपर्युक्त तथ्यों पर शिक्षकबंधु एवं सुधीजन पुनः ध्यान देंगे। यद्यपि पाठ्यपुस्तक के लिए सामग्री प्रस्तुत करने में प्रतिभागियों ने यथासाध्य परिश्रम किया है, निर्देशानुसार उन्होंने अभ्यास तथा अन्य उपयोगी सामग्री देकर इसे परिष्कृत करने का पूरा प्रयास किया है तथापि पाठ्यपुस्तक के लेखन से मुद्रण तक के विभिन्न स्तरों में जो स्खलन हुए हों उसके लिए अग्रिम क्षमा मांगने के अतिरिक्त यह अनुरोध भी करता हूँ कि अपने परामर्शों से अध्यापकबन्धु मुझे अवगत करायें तथा पुस्तक की व्यापक परिष्कृति में अपनी भी भागीदारी सुनिश्चित करें।

(प्रो.) उमाशंकर शर्मा 'ऋषि'

अध्यक्ष

संस्कृत पाठ्यपुस्तक विकास समिति

विषयानुक्रमणिका

क्रम	पाठः	पृष्ठाङ्काः
1.	वन्दना	01–08
2.	कूर्मशशककथा	09–16
3.	ऋतुपरिचयः	17–25
4.	स्वतन्त्रता-दिवसः	26–37
5.	प्रहेलिकाः	38–46
6.	संख्याज्ञानम्	47–54
7.	दीपोत्सवः	55–63
8.	वसुधैव कुटुम्बकम्	64–74
9.	सुभाषितानि	75–82
10.	दिनचर्या	83–91
11.	डॉ० भीमरावः अम्बेदकरः	92–101
12.	अरण्यम्	102–111
13.	परिहास-कथा	112–119
14.	बोधगया	120–126
	प्रासङ्गिकं व्याकरणम्	
1.	वर्णाः	127
2.	उच्चारण-स्थानानि	128–129
3.	सुबन्त-पदानि	129–134
4.	तिङन्त-पदानि	134–138
5.	अव्यय-पदानि	138–140
6.	शब्दरूपाणि	140–153
7.	धातु-रूपाणि	154–183

'पर्यावरण एवं वन विभाग, बिहार सरकार'

बिहार पृथ्वी दिवस (9 अगस्त) के अवसर पर 11 सूत्री संकल्प।

मैं संकल्प लेता/लेती हूँ कि

1. पृथ्वी के संरक्षण तथा पर्यावरण संतुलन को बनाये रखने के लिए सदैव कार्य करूँगा।
2. वर्ष में कम से कम एक पौधा अवश्य लगाऊँगा, इसे बचाऊँगा तथा पेड़-पौधों के संरक्षण में सहयोग करूँगा।
3. तालाब, नदी एवं पोखर आदि को प्रदूषित नहीं करूँगा।
4. जल का दुरुपयोग नहीं होन दूँगा एवं इस्तेमाल के तुरंत बाद सावधानीपूर्वक नल को बंद करूँगा।
5. बिजली का अनावश्यक उपयोग नहीं करूँगा तथा आवश्यकता नहीं रहने पर बिजली के बल्ब, पंखा एवं अन्य उपकरणों को बंद रखूँगा।
6. कूड़ा-कचरा को निर्धारित स्थानों पर रखे डस्टबिन में डालूँगा तथा अन्य लोगों से भी इसके लिए अनुरोध करूँगा।
7. अपने घर तथा स्कूल को साफ रखूँगा।
8. प्लास्टिक/पॉलीथीन का उपयोग बंद कर इसके स्थान पर कपड़े या कागज के बने झोलों/थैलों का उपयोग करूँगा।
9. पशु-पक्षियों के प्रति दया का भाव रखूँगा।
10. नजदीक के कार्यों के लिए साइकिल का उपयोग करूँगा अथवा पैदल जाऊँगा।
11. आवश्यकतानुसार कागज का उपयोग करूँगा तथा इसका दुरुपयोग नहीं होने दूँगा।